हुए पावापुरी नगरी में चर्तुमास हेतु पधार चुके थे। प्रभु का यह अंतिम चुर्तमास था। प्रभु महावीर का प्रथम क्रान्तिकारी उपदेश भी इसी नगर में हुआ था। जिस में इन्द्रभूति सहित ४४०० से ज्यादा ब्राह्मणों ने प्रभु महावीर के कर कमलों से दीक्षा ली थी। प्रभु महावीर सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, वीतराग, अरिहंत, तीर्थंकर वन चुके थे। वह सर्व जीवों के कल्याणार्थ धर्म उपदेश कर रहे थे। चर्तुमास का काफी भाग व्यतीत हो चुका था। प्रभु महावीर एक चुंगी में ठहरे थे। अंतिम समय जानकर प्रभु महावीर ने अंतिम धर्म उपदेश देना शुरू किया। यह उपदेश ही उतराध्ययन सूत्र में लिपिवद्ध है। इस के ३६ अध्याय हैं। प्रत्येक अध्ययन अपने आप में स्वतन्त्र विषय है। यह ग्रंथ जैन धर्म का सार भूत ग्रंथ कहा जा सकता है। इस ग्रंथ में प्राचीन काल से टीका, टव्वा निंयुक्ति चुर्णि लिखी जाती रही है।

इस ग्रंथ पर ४६ के करीव टीकाएं प्राचीन काल से १८ सदी तक लिखी जा चुकी हैं। यह टीकाएं श्री अगर चन्द नाहटा के भण्डार में देखी जा सकती हैं।

इस ग्रंथ की प्राचीनता वौद्ध ग्रंथ धम्मपद व महाभारत में देखी जा सकती है। दोनों ग्रंथों के कई श्लोक का तुलनात्मक अध्ययन उतराध्ययन सूत्र से किया जा सकता है। प्रवर्तक श्री फूल चन्द जी 'श्रमण' ने इस सूत्र के वारे में कहा है :

"जो कुछ उतराध्ययन सूत्र में है, वह सारे जैन आगमों में है, जो उतराध्ययन सूत्र में नही, वह किसी आगम में नहीं। आगम से प्रतिपादित हर विषय श्री उतराध्ययन सूत्र में उपलव्ध होता है।"

ऐसे महत्वपूर्ण सूत्र का अनुवाद हमने १९७३ में करना शुरू किया जो १९७६ में प्रकाशित हुआ। प्राचीन

निर्युक्तिकार आचार्य भद्रबाहु ने इस सूत्र की महत्वपूर्ण स्तुति इस प्रकार की है :

"जो जीव भव भ्रमण को समाप्त करके शीघ्र मोक्ष को प्राप्त करने के योग्य है जिनका भव में बंधन कम रह गया है। इस प्रकार के महापुरूष श्री उतराध्ययन सूत्र के ३६ अध्ययन का शुद्ध हृदय से अध्ययन करते हैं। जिनका भव बंधन बाकी है। जिनका संसार भ्रमण बाकी रह गया है। जिन जीवों के अशुभ कर्मो के कारण अशुभ विचार है वह उतराध्ययन का अध्ययन करने के अयोग्य है। इस लिए जिनेन्द्र भगवान द्वारा प्रतिपादित शब्द और विशाल अर्थो वाले इस उतराध्ययन सूत्र का विधि सहित तप करके, गुरूओं से प्रसन्नता से अध्ययन करने चाहिए।"

इस ग्रंथ की गणना मूल सूत्र से की गई है। दशवेकालिक, आवश्यक सूत्र के बाद नव दीक्षिता साधु व साध्वी के लिए इस शास्त्र का अध्ययन जरूरी है। प्रथम अध्ययन विनय श्रुत में भिक्षु को मर्यादा से जीवन गुजारने का निर्देश है। गुरू व शिष्य का रिश्ता, उस के लक्षण बताए गए हैं। ४८ गाथा वाले अध्ययन में शिष्य को अनुशाषण में रहने का आदेश है। शिष्य को विनित बनने का उपदेश है। विभिन्न उदाहरणों से विनयवान शिष्य को विनय धर्म ग्रहण करने का आदेश है। इस उपदेश में अविनित शिष्य को सडे कान वाली कुतिया व सूअर से तुलना की गई है। शिष्य को समझाया गया है कि गुरू की किसी बात का गुस्सा न करे। गुरू के समक्ष कैसे बैठें ? कैसे बात करें ? कैसे झूठे वचनों से बचें ? कैसे विनय वान हो कर गुरू से ज्ञान अर्जित करें? सब का वर्णन समझाया गया है।

दूसरे अध्ययन में साधु जीवन में आने वाले कष्टों का वर्णन है। इन कष्टों के कारण कई बार कई लोग

साधु जीवन तक छोड़ देते हैं। इन्हें परिषह की संज्ञा दी गई है। ये २२ हैं। सभी परिषह साध्वाचार के प्राण हैं इस में ४६ गाथा हैं यह तृतीय अध्ययन का नाम चतुरंगीय है। इस में धर्म के ४ महत्वपूर्ण अंगों की दुर्लभता का वर्णन है। वह अंग हैं :

१. मनुष्य जन्म २. सम्यक् धर्म का सुनना
३. श्रद्धा ४. पुरुषार्थ।

ये इस अध्ययन में २० गाथाएं है। यह अध्ययन वहुत महत्वपूर्ण अर्थ रखता है। जो मननीय है।

चर्तुथ अध्ययन के नाम असंस्कृत अध्ययन है। इस में मनुष्य को सावधान करते हुए कहा गया है "जीवन क्षण भंगुर है, यह जीवन की डोर कभी टूट सकती है। मृत्यु के समय धन, सम्पति, रिश्तेदार, सगे-संबंधी, मित्र और माता-पिता कोई सहायक नहीं होता। इस लिए मनुष्य को प्रमाद का त्याग कर, सत्य धर्म की शरण ग्रहण करनी चाहिए। इसकी १३ गाथाएं हैं। यह वैराग्य पूर्ण अध्ययन है। पांचवे अध्ययन का नाम अकाम मरणीय है। इस में ज्ञानी और अज्ञानी की मृत्यु का अंतर वताया गया है। ज्ञानी पंडित परण स्वीकार करता है। अज्ञानी वाल मरण। इस की ३२ गाथाएं है। इस में मुनि को समाधि मरण स्वीकार करने की वात कही गई है।

छठा अध्ययन क्षुल्लक निग्रंथीया नाम से प्रसिद्ध है। इस की ५८ गाथाएं है। इस में जीव से अज्ञान से वचने का उपदेश प्रभु महावीर ने दिया है। वह फुरमाते हैं कि कर्मों का फल भोगते जीव का कोई सहारा नहीं वनता। इस लिए सम्यक दृष्टि जीव संसार के किसी पदार्थ के प्रति लगाव नहीं रखे। जीव को वैर, अहिंसा, चोरी छोड़ने का उपदेश दिया गया है। इस अध्ययन में वताया गया है, कि मात्र तत्व

भाषा, ग्रंथों का ज्ञान जीव का कल्याण नहीं कर सकता। सम्यक् ज्ञान द्वारा ही आत्मा का कल्याण संभव है।

सातवें अध्ययन के नाम उरभ्रीय है। इस में विभिन्न उदाहरणों द्वारा जीव को समझाया गया है कि इन्द्रीयों के सुख क्षण भंगुर हैं। यह कुछ समय ही सुख देते हैं। ज्यादा समय तो यह दुःख ही देते हैं। इसी कारण ज्ञानी पुरूष इन्द्रीयों के विषय भोगों में नही फंसता। इस अध्ययन में ३० गाथाओं में विभिन्न उदाहरण देकर जीवन की क्षण भंगुरता समझाई गई है। इस अध्ययन में एक कहानी ऐसी है जो वाईवल में भी प्राप्त होती है।

आठवें अध्ययन का नाम कापलिय है। इस में कपिल मुनि द्वारा ५०० चोरों को दिया उपदेश शामिल है। इस उपदेश को सुन कर यह चोर प्रतिवोधित हुए। वह मुनि वने। कपिल मुनि के माध्यम से भगवान महावीर फुरमाते हैं "विरक्ति, संयम, विवेक, दुर्गति से वचाने वाले हैं। भोगों से मुख मोड़ना और परिग्रह का त्याग ही कर्म वंधन से छुटकारा दिलाता है।" इस अध्ययन की २० गाथाएं हैं।

नवमें अध्ययन का नाम 'नमि प्रवज्या' है। इस अध्ययन में मिथिला के राजा नमि व इन्द्र के प्रश्नोत्तर हैं। इन्द्र भेप वदल कर राजा को साधु वनने से रोकता है। यह प्रश्नोतर जीवन की सच्चाई है। इस अध्ययन में ६२ गाथाएं हैं।

दसवें अध्ययन में प्रभु महावीर ने अपने शिष्य को प्रमाद से वचने का वैराग्य उपदेश दिया है। गौतम का इन्द्रीय क्षीण होने की शिक्षा प्रदान की है। यह अध्ययन इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन का नाम द्रुम पत्रिका है। इस की ३६ गाथाएं हैं।

ग्यारहवां अध्ययन वहुश्रत पूजा है। इस में ज्ञानी

व अज्ञानी के लक्षण बताए गए हैं। शिक्षा ग्रहण के पांच कारण बताए गए हैं। १. न हंसने वाला २. इन्द्रिय निग्रह करने वाला ३. हृदय विदारक भाषा कहने वाला ४. शुद्ध आचार वाला ५. अच्छे चारित्र वाला।
इस में ३० गाथाएं हैं।

वारहवां अध्ययन का नाम हरिकेषी है। इस में चण्डाल जाति के एक मुनि का वर्णन है। इस में जैन धर्म में वेद यज्ञ का स्थान का पता चलता है। जैन धर्म में न वेद का स्थान है, न ब्राहमणों के कर्म काण्ड का। यहां तपस्या का महत्व है जाति का नहीं। इस अध्ययन में ४७ गाथाएं हैं।

तेरहवें अध्ययन में चित्त सम्भूति मुनि भाईयों का वर्णन हैं इस में ३५ गाथाओं में आपसी वार्तालाप के माध्यम के प्रभु महावीर के उपदेश दोहराया गया है। इस की ३५ गाथाएं है। इस में चित मुनि द्वारा अपने राजा वने भाई को वैराग्यमय उपदेश दे रहा है।

चौदहवें अध्ययन का नाम इषुकारीय है। इस अध्ययन में भृगु पुरोहित व उसकी पत्नी वशा तथा दो पुत्रों राजा रानी कमलावती, राजा इषुकारीय के दीक्षा के प्रसंग है। इस अध्ययन में वैदिक परम्परा की कई मान्यताओं का खण्डन है। प्राचीन काल में राजा उस व्यक्ति की सम्पति ग्रहण कर लेता था जिस की संतान न हो। राजा भी भृगु पुरोहित के परिवार की दीक्षा का समाचार सुन कर कार्य करने जा रहा था पर रानी कमलावती के उपदेश से वह इस कार्य से रूक गया। इस अध्ययन परस्पर वार्तालाप के रूप में है। इस अध्ययन की ५३ गाथाएं हैं।

१५वें अध्ययन का नाम सभिक्षु है। इस अध्ययन में अच्छे भिक्षु के गुण बताए गए हैं। इस अध्ययन में बताया गया है कि सच्चा साधु राग, द्वेष छोड़ कर संसारिक संसंग

से दूर रहता है। अपनी प्रसिद्धि नही चाहता, न ही ज्योतिष से आजीविका चलाता है। सच्चा साधू रूखा सूखा खा कर गुजारा करता है। तप व स्वाध्याय में समय व्यतीत करता है। भिक्षा की प्राप्ति पर किसी को आशीवाद नहीं देता, न मिलने पर श्राप नहीं देता। वह जात पात के भेद से उपर उठ कर समभाव से विचरण करता है। सच्चा साधु कर्म की निर्जरा द्वारा मोक्ष को प्राप्त करता है। इस में गाथाओं की संख्या १६ हैं।

१६वें अध्ययन ब्रह्मचर्य समाधि स्थान है। इस अध्ययन में ब्रह्मचर्य व्रत पर भगवान महावीर ने अच्छी व्याख्या की गई है। किस तरह विशुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन किया जा सकता है। उस के बारे में वताया गया है। यह ब्रह्मचारी भिक्षुओं के लिए निर्देश के रूप में है। एक स्थान पर कहा गया है "जो कठिन ब्रह्मचर्य का विशुद्ध रूप से पालन करता है वह देव, दानव, गंधर्व, यक्ष व राक्षसों द्वारा पूज्नीय, वन्दनीय होता है। इस अध्ययन के १२ प्रश्न गद्य रूप में है।

१७वां अध्ययन गाथा रूप में है।

१८वां अध्ययन संजयीय है। जो काफी प्राचीन लगता है। इस अध्ययन में भारतवर्ष में हुए चक्रवर्ती, तीर्थंकरों, प्रत्येक वुद्ध का गुणगान ५४ गाथाओं के रूप में किया गया है। इस में जैन इतिहास की प्राचीनता छुपी है।

१९वें अध्ययन में मृगापूत्र द्वारा दीक्षा ग्रहण करने का सुन्दर वर्णन है। मृगापूत्र सुग्रीव नगर के वलभद्र का सपूत्र था। इस राजा की रानी का नाम मृगावती था। उसी के पूत्र को किसी मुनि कों देखते ही पूर्व भव याद आ गया। पूर्व भव याद आतें ही उसे संसार के वंधन झूठे नजर आने लगे। उस नें राजपाट का त्याग कर संयम ग्रहण किया।

मृगापूत्र के माध्यम से श्रमण भवान महावीर से संसार को वैराग्य मय उपदेश दिया। यह अध्ययन जीवन को वदलने की क्षमता रखता है। गाथा की संख्या ९८ है।

२०वें अध्ययन का नाम महानिर्गथीया अध्ययन है। यह इतिहास अध्ययन में राजा श्रेणिक की मण्डी कुक्षी चेत्य में ध्यान कर रहे अनाथी मुनि की धर्म चर्चा है। राजा श्रेणिक ने अनाथी मुनि के रूप, लावण्य को देख कर कहा " भिक्षु मुझे वताओ कि तुम भिक्षु क्यों तुम साधु वन गए ? तुम्हारे मन में कौन सी चोट थी, जो तुम्हे इस मार्ग पर ले आई। अनाथी मुनि ने उत्तर दिया " राजन ! मैं अनाथ धा इस लिए मुनि वन गया।" राजा ने सोचा यह यतीम वालक है। मुझे इस की सहायता करनी चाहिए। राजा ने पुनः कहा "मैं तुम्हारा नाथ वनता हूं। तुम साधु जीवन त्याग कर मेरे महिलों में चलो।" अनाथी मुनि ने उत्तर दिया "राजन ! जो स्वयं अनाथ है वह किसी का नाथ कैसे वन सकता है ?" राजा को अपनी अनाथता का अर्थ समझ न आया। उसने कहा "मुनि राज शायद आपको पता नहीं कि मैं मगध सम्राट विंवसार श्रेणिक हूं। यह जो मेरे यहां संसार की हर सुख सुविधा मौजूद है। तुम मेरे साथ चलो और जीवन का आनंद व सुख का उपभोग करो।" राजा के इस भोग निमंत्रण से मुनिराज को राजा की अज्ञानता पर तरस आया फिर मुनिराज ने इस अध्ययन के माध्यम से अपनी पूर्व जीवन कथा वताते हुए अपनी कथा सुनाई।

"राजन् मैं भी आप की तरह एक राजकुमार था। मेरा भी भरा-पूरा परिवार, धन संपदा थी। मेरे पास अनेकों दास व दासीयां, सेना व पशुधन था। मेरे परिजन व प्रजा मेरी आज्ञा का पालन करते थे। सव कुछ ठीक ढंग से चल रहा था पर अशुभ कर्म उदय से एक वार मुझे एक

आंख का रोग हो गया। इस रोग के निवारण के लिए वैद्यों ने अनेको उपचार किए। फिर मंत्र-तंत्र व यंत्र भी मेरी पीड़ा को कम न कर सका। मेरे माता-पिता की चिंता इस रोग को कम करने में सहायक न हो सकी। मेरी पत्नी जो हर समय मेरी सेवा में रहती थी वह भी मेरी पीड़ा को कम करने में किसी प्रकार का सहयोग न कर सकी। इस प्रकार सब कुछ होते हुए भी मैं अनाथ था। मेरा धन-धान्य व परिवार मेरी पीड़ा में काम न आ सका। कोई मेरा नाथ न बन सका। फिर मैंने धर्म का सहारा लिया। मैंने सोचा कि अगर मैं इस रोग से मुक्त हो जाउं तो मैं साधु जीवन ग्रहण कर लूंगा। ऐसा सोच कर मैं रात को सोया सुबह उठा तो मेरा रोग धर्म के प्रताप से समाप्त हो चुका था। मैंने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार साधु जीवन ग्रहण किया। अब मैं अपना नाथ स्वयं हूं। मुझे किसी नाथ की जरूरत नहीं। अब मेरा धर्म ही मेरा नाथ है। इस सुन्दर अध्ययन में ६० गाथाएं हैं जिन में अनाथ सनाथ का भेद बताया गया है।

२१वें अध्ययन का नाम समुन्द्रपालीय है। इस समुद्रपाल के किसी अपराधी को देख कर दीक्षा लेने का वर्णन है। बाकी अध्ययन में साधूचर्या का वर्णन है। इस में २४ गाथाएं हैं। साधू को राग द्वेष रहित जीवन बिताने का उपदेश है।

२२वें अध्ययन भगवान नेमिनाथ के जीवन से संबंधित है। इस अध्ययन में रथनेमि जो भगवान का भ्राता था, के साधु जीवन से भटकने का वर्णन है। उसे भगवान नेमिनाथ की भगेतर साध्वी राजुलमति साधु जीवन में उपदेश के माध्यम से संयम में स्थिर करती है। इस अध्ययन का नाम रथनेमिया है। इस में ४७ गाथाएं हैं।

२३वां अध्ययन जैन इतिहास का महत्त्वपूर्ण

अध्ययन है। इस में प्रभु पार्श्वनाथ के शिष्य केशीश्रमण व प्रभु महावीर के शिष्य इन्द्रभूति गोतम के वार्तालाप का वर्णन है। इस में जिन कल्प व स्थविर कल्प का वर्णन है। भगवान महावीर ने इस माध्यम से अपना रिश्ता श्रमण भगवान पार्श्वनाथ व उनकी परम्परा से जोड़ा है। इस अध्ययन से हमें गणधर गोतम स्वामी के महान चारित्र का पता चलता है। इस अध्ययन में ८६ गाथाएं हैं।

२४वें अध्ययन का नाम प्रवचनमाता है। इस अध ययन में आठ प्रवचन माता का वर्णन है जो माता की तरह साधु के पांच महाव्रत की रक्षा करती है। यह माताएं हैं ५ समिति व ३ गुप्ति। इन प्रवचन माता का पूत्र साधु समाज में आदर सत्कार पाता है। इस अध्ययन में २७ गाथाएं हैं।

२५वें अध्ययन का नाम यज्ञीय है। इस में ब्राह्मण परम्परा के हिंसक यज्ञ का वर्णन है। इस अध्ययन में वेदों का मुख, यज्ञ का मुख, नक्षत्रों का मुख बताया गया है। इन्द्रिय निग्रह. राग-द्वेष, कषाय में मुक्ति का उपदेश दिया गया है। इस अध्ययन में कहा गया है "सभी वेद पशु वध का उपदेश और आधीन रखने की बात करते हैं। यज्ञ पाप का कारण है। वेद, यज्ञ पाठ करने वाला या यज्ञ करने वाले की रक्षा नहीं कर सकते क्यों कि कर्म बलवान है।

२६वां अध्ययन का नाम समाचारी है। समाचारी साधु जीवन की व्यवस्था का नाम है। साधु जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। यह समाचारी साधु को संयमी जीवन के प्रति संगठित करती है। समाचारी साधुओं का संविधान है। जिस का पालन हर साधु के लिए जरूरी है। समाचारी में साधु की दैनिकचर्या का वर्णन है। इस अध्ययन में यह भी बताया गया है कि संयमी समाचारी का कैसे पालन करे। इस में साधु की शयन, बैठना, प्रमार्जन, ध्यान, गुरू शिष्य के

संबंधों पर ५४ गाथाओं में प्रकाश डाला गया है।

२७वें अध्ययन में गर्ग मुनि का वर्णन है। जो बहुत तमस्वी व निपूण आचार्य थे। इस के विपरीत आप के शिष्य दम्भी, अविनित व अनुशासनहीन थे। गर्गाचार्य ने ऐसे शिष्यों का परित्याग कर एकांत साधना करने का निश्चय किया। इस अध्ययन का नाम क्षुल्किया है। जिसका अर्थ दुष्ट बैल है जो रास्ते में गाडी से पीछा छुड़वा स्वामी के लिए मुश्किल का कारण बनता है। इस अध्ययन में विनय व अविनय में अंतर बताया गया है। इस अध्ययन में १७ गाथाएं हैं।

२८वें अध्ययन का नाम मोक्ष मार्ग गति है। इस अध्ययन में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक्चारित्र व सम्यक्तप को मोक्ष मार्ग कहा गया है। ५ प्रकार के ज्ञान, षट्ट द्रव्य, नव तत्वों, २० प्रकार के सम्यकत्, आगमों का वर्णन है। इस मे सम्यकत् चारित्र के भेद, तप के भेदों का संक्षिपत व सरल वर्णन है। मात्र ३६ गाथाओं में सारे जैन दर्शन की रूप रेखा प्रस्तुत की गई है।

२९वां अध्ययन बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह प्रश्नोत्तर के रूप में है। इस में ७३ प्रश्नो का उत्तर है। इन में संवेग, निर्वेद, धर्म श्रद्धा, सहधर्मी वातरल्य, आलोचना, निंदा, गृहा, समायिक, चर्तुविशतित्त्व, वन्दन, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, प्रत्याख्यान, स्तुती, मंगल, प्रतिलेखना, प्रायश्चित, क्षमायाचना, स्वाध्याय, वाचना, प्रतिपुच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा, धर्म कथा, श्रुत, एकाग्रता, संयम, तप, व्यवधान, सुखसांत, अप्रतिवधता, विविक्त शयासन, विनिर्वतना, संभोग, उपधि, आहार प्रत्याख्यान, कषायत्याग, योग, देह मोह का त्याग, सहायता न चाहने, भक्त प्रत्याख्यान, समभाव प्रत्याख्यान, प्रतिरूपता, सेवा, सर्वगुण संपंनता, वीतरागता, क्षमा, निरलोभना,

ऋजुता, मृदुता, भावसत्य, करण सत्य, योग सत्य, मन वचन व काया गुप्ति, समधारणा, वाक्य को सम्यक् ढंग लगाना, चक्षु, घाण, जीभ, स्पर्श के विषय, क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रेम, द्वेष और मिथ्या दर्शन पर विजय पाने का फल बहुत सरल ढंग से बताया गया है। इस के अंतर्गत १४ गुणस्थान का वर्णन आ गया है। सभी प्रश्न जैन दर्शन की भूमिका के मुख्य प्रश्न हैं। इन के उत्तर प्रभु महावीर ने सरल ढंग से दिए हैं।

३०वें अध्ययन का नाम तपोमार्ग गति है। इस में भिन्न भिन्न प्रकार के तपों का वर्णन है। तप के दो भेद किए गए हैं : बाह्य तप, आंतरिक तप। दोनो तपों के भेदों का वर्णन सविस्तार से किया गया है। इस अध्ययन में ३७ गाथाएं हैं।

३१वां अध्ययन चरणविधि है। इसका अर्थ विवेकपूर्ण किया कर्म। इस अध्ययन में संयम के प्रति विवेक और असंयम के प्रति अविवेक रखने के लिए उपदेश दिया गया है। इस अध्ययन में ३ दण्ड, ३ गौरव, ३ शल्य, ४ विकथा, ४ संज्ञा, ५ इन्द्रीयों के ६ विषय, भिक्षु की ४२ दोष प्रतिमाएं, ७ भय, ८ मद, ९ गुप्ति, १० प्रकार के धर्म, श्रावक की ११ प्रतिमाएं, १३ क्रिया स्थान, १४ भूत ग्राम जीव समूह, १० परमधर्मिक देवों के भेदों का वर्णन, सूत्रकतांग के १६ अध्ययनों के नाम, १७ तरह का संयम, १८ प्रकार का अब्रह्मचर्य, २० असमाधि के कारण, २२ भिक्षा के दोष, सूत्रकृतांग के २७ अध्ययन, ५ महाव्रत की २५ भावनाएं, सत्यव्रत की ५ भावनाएं, ब्राह्मचर्य व्रत की ५ भावनाएं, ५ इन्द्रीयों के विषय, साधु के २७ गुण, पापश्रुत के २९ भेद, सिद्धों के ३१ भेद, और ३३ आशातनाओं का वर्णन है। यह

सब कुछ मात्र २१ गाथाओं में वर्णन किया गया है।

३२वें अध्ययन का नाम अप्रमाद स्थान है। इस अध्ययन में अशुभ विचारों के त्याग और अशुभ कार्य छोड़ने के लिए निर्देश दिया गया है। अशुभ कार्यों में लगे रहना प्रमाद है। इस अध्ययन में राग द्वेष को कर्म का मूल वीज कहा गया है। इन्द्रीयों में विषयों पर संयम रखने की आज्ञा दी गई है। इस अध्ययन में १११ गाथाएं हैं।

३३वां अध्ययन का नाम कर्म प्राकृति है। इस में जैन धर्म के कर्म सिद्धांत का वर्णन किया गया है। इस में ८ प्रकार के कर्मों का भेद और प्रभाव का वर्णन किया गया है।

३४वें अध्ययन लेश्या का वर्णन है। लेश्या जैन धर्म का परिभाषित शब्द है। छहलेश्याओं में वर्णन में प्रभु महावीर ने वताया है कि यह लेश्या का स्वभाव कैसा है ? रंग कैसा है,? आत्मा का कर्म के साथ संवंध स्थापित कैसे करती है ? किस प्रकार कर्मवंधन का कारण वनती है। इस अध्ययन की ६१ गाथाएं सव विस्तृत रूप से मिलता है।

३५वें अध्ययन का नाम अनगार मार्ग गति है। इस अध्ययन में साधु को उसका धर्म पालने के लिए विस्तार से प्रेरित किया गया है। साधु राग द्वेष रहित हो कर जन्म मरण की इच्छा छोड़ दे। इच्छाओं का निग्रह करके संयम की ओर अग्रसर हो। संसरा कर अर्थ कामना है, वासना है, कामना और वासना से मुक्त होना, जन्म व मरण से मुक्त होन है। निर्वाण है। यह निर्वाण ही सिद्ध अवस्था है। इस अध्ययन में २१ गाथाएं हैं।

अंतिम अध्ययन ३६वां है। इस का नाम जीव-आजीव विभिक्त है। जैसा इस के नाम से वर्णन है इस में जीव आजीव की विस्तार से व्याख्या की गई है। इस में जीव के भेद, आजीव के भेद का विस्तार से वर्णन है। इस

अध्ययन के बाद प्रभु महावीर का निर्वाण हो गया। ऐसा इस अध्ययन की अंतिम गाथा व आचार्य भद्र बाहु रचित कल्प सूत्र में बताया गया है।

इस ग्रंथ का विमोचन पंजाब के महामहिम राज्यपाल श्री जय सुखलाल हथी ने पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में जैन चेयर के उद्घाटन समारोह में किया। इसकी समीक्षा दैनिम अजीत पंजाबी में प्रकाशित हुई।

उपासक दशांग सूत्र- २ :

हमारे द्वारा प्रकाशित श्री उपासक दशांग पंजाबी भाषा का सर्व प्रथम किसी अंग शास्त्र का पंजाबी अनुवाद है। काफी समय से मेरे मन में यह चिंतन चल रहा था कि किसी ऐसे ग्रंथ का अनुवाद किया जाए जिसका संबंध श्रावक (उपासक) धर्म से संबंधित हो। मैंने अपने मन की बात अपने धर्म भ्राता रविन्द्र जैन से की। उन्होंने बडे लम्बे विमर्श के बाद श्री उपासक दशांग सूत्र का पंजाबी अनुवाद का सूझाव रखा। क्योंकि ४५ आगमों में यही मात्र ऐसा आगम है, जो श्रावक धर्म का प्ररूपण करता है। इसका स्थान अंग साहित्य में आता है। ज्यादा आगमों मे मुनि चर्या का वर्णन है। वैसे श्वेताम्बर आगमों में श्रावकाचार पर विभिन्न ग्रंथ, भिन्न भिन्न भाषाओं में मिलते। मैंने अपने धर्मभ्राता को इनका अध्ययन करने को कहा। इस अंग पर मात्र एक संस्कृत टीका आचार्य अभयदेव सूरि जी ने लिखी है। इस टीका की एक प्रति अंबाला में हमें स्व० आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्नसूरि जी महाराज से हिन्दी अनुवाद वाली प्राप्त हुई। मैंने इस टीका के अतिरिक्त आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज की हिन्दी टीका भी पढी। इस आगम में प्राचीन जैन श्रावकों के जीवन का सांस्कृतिक रहन सहन का वर्णन मिलता है।

इस आगम में भगवान महावीर के १० श्रावकों का वर्णन है। इसके १० अध्ययन हैं। यह आगम में प्रत्येक श्रावक भगवान महावीर से १२ व्रत ग्रहण करता है। इस ग्रंथ के लिए आशीवाद उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज ने भेजा था। आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज व आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी महाराज का आशीवाद भी प्राप्त हुआ। इस ग्रंथ की भूमिका श्री अगर चन्द्र नाहटा जी ने लिखी थी। दस अध्ययनों का सार इस प्रकार है :

१. प्रथम अध्ययन में आनंद श्रावक के १२ व्रत गहण करने का वर्णन है। इस अध्ययन में आनंद श्रावक की अथाह सम्पदा का वर्णन है। खेती, पशु, जहाज, स्वर्ण मुद्राओं का वर्णन है। इस अध्ययन में आनंद श्रावक को अवधि ज्ञान की प्राप्ति का वर्णन है। अवधि ज्ञान के विषय में आनंद श्रावक ने गौतम स्वामी की चर्चा का वर्णन है। गौतम जैसे महान् गणधर द्वारा अपनी गलती का श्रावक आनंद से क्षमा याचाना की प्रार्थना का मार्मिक वर्णन है। इस अध्ययन में १२ व्रतों, अतिचारों का विधि विधान है। श्रावक क्षरा प्रतिमा धारण करने का वर्णन है।

(२) द्वितिय अध्ययन कामदेव श्रावक के जीवन का वर्णन, देवता द्वारा परिषह : कामदेव का व्रत में अडोल रहने का वर्णन है। इस में भी श्रावक द्वारा अणुव्रत ग्रहण करने का वर्णन, व प्रतिमा अराधना का वर्णन है।

(३) तृतीय अध्ययन में चुल्नीपिता श्रावक के वैभव पूर्ण जीवन का वर्णन है। चुल्नीपिता के जीवन में एक देव रात्री में उपसर्ग कर उसके तीन पुत्रों को मार डालता है, क्योंकि वह देवता की धमकी को प्रवाह नहीं करता। फिर देव माता भद्रा को मारने की धमकी देता है। जिस कारण श्रावक साध

ना से विचिलत हो जाता है। जिस से उसकी माता धर्म में पुनः स्थिर करती है। इस में श्रावक की मातृ भक्ति का पता चलता है।

चर्तुथ अध्ययन में सुरादेव श्रावक द्वारा साधना लीन होने पर ३ पुत्रों की जघन्य हत्या करता है। फिर १६ रोग उत्पन्न होने की धमकी देता है। जिससे श्रावक घवरा जाता है। वह देव माया के चक्र में फंस कर घवरा जाता है जिसे उसकी पत्नी धर्म में स्थिर करती है।

पांचवें अध्ययन में चुलशतक श्रावक की श्रावक धर्म अराधना का वर्णन है। इस में भी एक रात्री एक मिथ्यात्वी देव आकर पुत्रों को मारने की धमकी देता है। फिर श्रावक पुत्रों के टुकडे काट कर लहु के छींटे उस पर फैंकता है। चुल्लशतक को दृढ कर देव उसका समस्त धन नाश करने की धमकी देता है। धन सम्पति की धमकी से श्रावक घवरा जाता है। वह उस देव को पकडने दौड़ता है। अंधेरे में आवाज लगाता है। सारा विवरण वह अपनी धर्म पत्नी से कहता है। पत्नी उसे धर्म पर स्थिर करती है। व्रत भंग के लिए प्रर्यश्चत करने को कहती है। इस प्रकार इस श्रावक का वर्णन है।

छटे अध्ययन में कुण्डकोलिक श्रावक का वर्णन है। वह भी प्रभु महावीर का श्रावक धर्म का अराधक था। एक दिन दोपहर को वह अपनी अशोक वाटिका में ध्यान में लीन था। एक देव प्रकट होकर कहने लगा "हे कुण्डकोलिक ! मंखलि पुत्र गोशालक का धर्म वहुत अच्छा है। उस में उत्थान, वल, वीर्य पुरस्कार, पराक्रम के लिए कोई स्थान नहीं। सव कुछ नियति के अनुसार माना गया है। तुम भगवान महावीर के धर्म को छोड़ कर गोशालक का धर्म ग्रहण करो।"

इस के प्रश्न का जो कुण्डोलिक उत्तर देता है वह दार्शनिक जगत में वहुत महत्त्व रखता है। वह कहता है " हे देव ! तुम्हे देवलोक में इस प्रकार की ऋधि सिद्धि किस प्रकार प्राप्त हुई ?"

देव ने कहा "हे देवानुप्रिया ! मुझे यह अलोकिक देवत्व विना पराक्रम व परिश्रम से प्राप्त हुआ है।"

कुण्डकोलिक ने कहा "हे देव ! जो तुम्हें अलोकिक वुद्धि विना उथान, पराक्रन आदि से प्राप्त हुआ है तो जिन जीवों के पास उत्थान, पराक्रम आदि नहीं वह सव देव क्यों नही वनते ? तुम्हारा कथन मिथ्या है प्रभु महावीर का धर्म सत्य पर आधारित है। इस वार्तालाप के वाद देव चला गया। श्रमण भगवान महावीर उस के नगर में धर्म प्रचार करते हुए पधारे। वह भी प्रभु महावीर के दर्शन पहुंचा। प्रभु महावीर सर्वज्ञ सर्वदर्शी थे। अपनी धर्म सभा में प्रभु महावीर ने देवता कुण्डकोलिक के साथ हुई देव चर्चा की घटना को दोहराया। उन्होंने फुरमाया, "अगर घर में रह कर कोई श्रावक देवता को धर्म चर्चा में हरा सकता है, तो आप ने अनगार हो अंग उपांग के जानकार हो आप के लिए क्या असंभव है ? आप को इस श्रावक से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

सातवां अध्ययन में कुंभकार जाति के श्रावक सद्दाल पुत्र का वर्णन है। यह मंखलि पुत्र गोशालक का परम उपासक था। इस की पत्नी भी गोशालक भक्ति में डूवी रहती थी। एक रात्रि एक देव ने तीर्थंकर जिन वीतराग के आगमन की सूचना दी। सद्दालपुत्र गोशालक को तीर्थंकर, मानता था। अगली सुवह प्रभु महावीर पधारे। प्रभु महावीर ने सद्दालपुत्र को सदमार्ग पर लगाया। फिर गोशालक उस के यहां आया। उसने उसका सम्मान पहले की तरह नहीं किया। पर जव गोशालक ने प्रभु महावीर की प्रशंसा की तो

सद्धालपुत्र ने उसकी सेवा भोजन, पानी संस्तारक से की। इस अध्ययन में सद्धालपुत्र के विस्तृत ज्ञान का पता चलता है। वह एक साथ प्रभु महावीर से चर्चा करता है दूसरी ओर मंखलि पुत्र गोशालक को प्रभु महावीर की स्तुती करने के लिए प्रेरित करता है। यह अध्ययन इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

८वें अध्ययन में महाशतक श्रावक का वर्णन है। उसकी १६ पत्नीयों में रेवती प्रमुख थी। वह पापिन थी। वह महाशतक की धर्माराधना में रूकावट डालती। उस ने जहर से अपनी १६ सोतों को मार कर, उन की संपति पर अधिकार कर लिया। वह मदिरा व मांस में इतनी लोलुपी थी कि राजाज्ञा का उल्लंधन कर वह अपने मायके एक वछड़ा मंगवा कर खाती थी। इन सब के वावजूद महाशतक की साधना निरंतर चल रही थी।

लम्वी साधना के वाद वह महाशतक को अवधि ज्ञान हो गया। एक रात्रि जव वह धर्म अराधना कर रहा था । शराव व मांस का सेवन कर खुले वालों सहित वह श्रावक महाशतक के पास आई। श्रावक को उस की गंदी हरकतों पर क्रोध आ गया। उस श्रावक ने रेवती को शीघ्र मरने और मरने के वाद नरक की भविष्यवाणी की। इस भविष्यवाणी को सुन रेवती भयभीत हुई। वह अव नशा भूल चुकी थी। यह भविष्यवाणी थी कि रेवती १६ रोगों से तड़प कर मरेगी। प्रभु महावीर को अपने श्रावक की भविष्यवाणी का पता चला तो उन्होंने महाशतक को ऐसा करने के लिए प्रायश्चित करने को कहा। प्रभु महावीर से महाशतक ने आज्ञा सहर्ष स्वीकार प्रायश्चित ग्रहण किया। प्रभु महावीर ने श्रावक को ऐसा सत्य वोलने से रोका, जो हिंसा का कारण हो।

नवम अध्ययन में नंदिनी फिता के श्रावक जीवन का वर्णन है। दसवें अध्ययन में सालिहिपिता का वर्णन है। इन दोनों श्रावकों के जीवन में कोई उल्लेखनीय घटना घटित नही हुई।

इन सभी श्रावकों के जीवन का उल्लेख करने वाली कुछ गाथाएं संग्रहणी सूत्र में उपलव्ध हैं। यह मूल शास्त्र भाग नहीं। यह गाथाएं शास्त्र का सार हैं।

दसों श्रावकों के नगर – एक श्रावक, वाणिज्य ग्राम, चम्पा में एक, वाराणसी में दो, कपिलपुर में एक, पोलासपुर में एक, राजगृह में एक, श्रावस्ती में दो श्रावक पैदा हुए।

२. पत्नीयों के नाम :

शिवनंदा, भद्रा, श्यामा, धन्ना, वहुला, पुष्पा, अग्निमित्रा, रेवती, आदि, उपत्नीयां , अश्विनी और फलगुमित्रा।

३. मरणोत्तर देव विमानों के नाम :

अरूण, अरूणाभ, अरूणप्रभ, अरूणकातं, अरूण्नेष्ट, अरूणध्वज, अरूणभूत,
अरूणावंतसर, अरूणागव, और अरूणाशील में देव भव में पैदा हुए।

४. पशुधन :

एक व्रज में १०,००० गायें होती थी। उसी के अनुसार १० श्रावकों के व्रजों की संख्या क्रमशः इस प्रकार है। (१) ४, (२) ६, (३) ८, (४) ६, (५) ६, (६) ६, (७) ६, (८) ८, (९) ४, (१०) ४,,

५. धन :प्रथम श्रावक के नाम १२ करोड, दूसरे के पास १८ करोड, तीसरे के पास २४ करोड, चौथे के पास १८

करोड, पांचवे के पास १८ करोड, छटे के पास १८ करोड, सातवें के पास ३ करोड आठवें के पास २० करोड स्वर्ण मुद्राओं का अपार धन था।

हर श्रावक ने ११ प्रतिमाओं को धारण किया। सभी श्रावक कृषि योग्य जमीन के स्वामी था। आनद श्रावक के पास ५०० हलों के योग्य कृषि भूमि थी। १५ सौ रथ, पाच माल डुलाई के वाहन थे। ८ किश्तीयां थीं। वाकी श्रावकों के पास कितने पशु वाहन थे उनका वर्णन इस शास्त्र में नहीं आया। सद्दाल पुत्र की ५०० दुकानें थी। जहां छोटे वडे वर्तन वेचने के लिए उस ने नौकर रखे थे। इस ग्रंथ का सारा खर्च साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की संसारिक माता दुर्गा देवी (लाहौर) ने किया। इस ग्रंथ का विमोचन एक भव्य समारोह में देहली के, लाल किला के भव्य प्रांगन में हुआ। इस सम्मेलन में विश्व के कोने कोने से विदेशी धार्मिक विद्वान व पत्रकार समिलित हुए। भारत के प्रमुख नेताओं में डा० कर्ण सिंह व अल्पसंख्यक आयोग के प्रथम चेयरमैन डा० गोपाल सिंह दर्दी उपस्थित हुए। अनेकों देशी-विदेशी पत्रकार आए थे। इस सम्मेलन के आयोजक विश्वधर्म संगम संस्थापक आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज ने किया था। इस अवसर पर रूहानी सत्संग मिशन के परम संत कृपाल सिंह जी विराजमान थे। सम्मेलन का उद्घाटन तत्कालिन गृहमंत्री ज्ञानी जैल सिंह जी ने किया। उन्होंने जामा मस्जिद से कवूतर छोड़ कर सम्मेलन का उद्घाटन किया। कवूतर शांति का प्रतीक माने जाते हैं। इस ग्रंथ में इंटरनैशनल महावीर जैन मिशन की तत्कालिन सचिव श्रीमती गुरुशक्ति (जैरी) का महत्वपूर्ण संदेश था। प्रस्तावना हमारी थी। यह ग्रंथ उप-प्रवर्तनी साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज को मालेरकोटला में भेंट किया गया।

इस ग्रंथ का विमोचन डा० गोपाल सिंह दर्दी चेयरमैन अल्पसंख्यक आयोग ने किया। यह किसी पंजाबी जैन ग्रंथ का अखिल विश्व स्तर पर प्रथम विमोचन था। उन्होंने हमारे इस अनुवाद की युक्त कंठ से प्रशंसा की। आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज ने इस ग्रंथ का परिचय हिन्दी व अंग्रेजी में दिया। हमें व हमारी गुरूणी जी को पंजाबी साहित्य की सेवाओं के लिए उन्होंने साधुवाद दिया। हमें उनका व संसार की महान आत्माओं का आशीवाद प्राप्त हुआ। इस ग्रंथ को संसार के कोने कोने तक पहुंचाने के लिए, विश्व भर के २०० प्रतिनिधीयों को यह ग्रंथ भेंट किया गया। डा० दर्दी प्रथम पंजाबी जैन गंथ को देख कर एक वार चक्ति रह गए। उन्होंने विमोचन का अवसर प्रदान करने के लिए आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज का आभार प्रकट किया। इस वात का वर्णन उन्होंने अपने भाषण में किया।

हमारो हौंसला वढ़ा, मैं लम्वी अस्वस्था के वाद ठीक हुआ था। मैं प्रभु महावीर का धन्यवाद करने दिल्ली से श्री महावीर जी तीर्थ पहुंचा। इस तीर्थ के वारे में हमने सुना ही था, दर्शन नहीं किए थे। हमें इस तीर्थ के वारे में जैसा देखा था उस से अधिक पाया। कहने को यह दिगम्वर तीर्थ है, पर यहां सारे भारत से हर जाति, वर्ग के व नस्ल के भक्तगन देश विदेश से आते हैं। यह मंदिर राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले में स्थित है। मेरे धर्मभ्राता श्री रविन्द्र जैन हर वर्ष इस तीर्थ पर वन्दन करने जाते हैं। पर यहां पहली वार हम इस विमोचन समारोह के वाद गए थे।

श्री सूत्र कृतांग सूत्र - ३

जैन आगम साहित्यों में श्री आचारंग सूत्र के वाद सूत्रकृतांग का स्थान है। यह एक ऐसा दार्शनिक ग्रंथ है